Vishnu Pratah-smarana

श्रीविष्णोः प्रातःस्मरणम्

Document Information

Text title : Vishnu Pratah-smarana

File name : vishnupratahsmarana.itx

Category : suprabhAta, vishhnu, vishnu

Location : doc_vishhnu

Author : Traditional

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Description-comments : From Hari Bhakti Vilas Tritiya Vilasa 28-31

Latest update : April 24, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

April 25, 2021

sanskritdocuments.org

श्रीविष्णोः प्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्त्तिशान्त्यै
नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम् ।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥ १॥

प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना
पादारविन्दयुगलं परमस्य पुंसः ।
नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य
पारायणप्रवणविप्रपरायणस्य ॥ २॥

प्रातर्भजामि भजतामभयङ्करं तं
प्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै ।
यो ग्राहवक्त्रपतिताङ्घ्रिगजेन्द्रघोर-
शोकप्रणाशनकरो धृतशङ्खचक्रः ॥ ३॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रातः पठेत्तु यः ।
लोकत्रयगुरुस्तस्मै दद्यादात्मपदं हरिः ॥ ४॥

॥ इति श्रीविष्णोः प्रातःस्मरणम् ॥

मैं भवभयरूप महारोग को उपशम करने के लिए गरुडवाहन, पद्मनाभ, ग्राह के द्वारा अभिभूत गजेन्द्र मोक्षणकारी, चक्रास्त्रधारी, नवीनकमलदललोचन, श्रीनारायण का स्मरण प्रातःकाल में करता हूँ ॥ १॥

जो वेदाध्ययनशील विप्रवर्ग का एकमात्र आश्रय है, मैं प्रातःकाल में मनः, वाक्य एवं मस्तक के द्वारा नरकार्णवतारण, परमपुरुष श्रीनारायण के पादपद्मयुगल को प्रणाम करता हूँ ॥ २॥

ग्राहग्रस्त गजराज दारुण शोक से अभिभूत होने पर जिन्होंने

शङ्ख-चक्र धारणपूर्वक गजराज के शोक को विदूरित किया था, मैं जन्मासरीण निखिल पापभय विनाशार्थ भक्तभयापहारक का प्रातःकाल में भजन करता हूँ ॥ ३॥

जो व्यक्ति प्रत्यूष में पवित्र श्लोकत्रय का पाठ करता है, लोकत्रय के गुरु उनको निज आत्मपद प्रदान करते हैं ॥ ४॥

Encoded and proofread by Sunder Hattangadi

Vishnu Pratah-smarana
pdf was typeset on April 25, 2021

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*